नागपुरी कथाकार प्रफुल्ल कुमार राय एवं फणीश्वरनाथ रेणु की प्रतिनिधि कथा साहित्यों में ग्रामीण जनजीवन की तुलनात्मक अध्ययन

पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

संकाय-जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष : २०२४

शोध निर्देशक

डॉ० जुरन सिंह मानकी
सहायक प्राध्यापक
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग (मुंडारी)
एस.एस.मेमोरियल कॉलेज, राँची

शोधार्थी

उमा कुमारी
यू०जी०सी० नेट (नागपुरी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची

विश्वविद्यालय नागपुरी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

भूमिका

झारखण्ड एक बहुभाषी राज्य है। यह न सिर्फ अनेक प्राकृतिक संपदाओं के लिए प्रसिद्ध है। अपितु अपने बहुभाषी संस्कृति के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। नागपुरी झारखण्ड की सबसे लोकप्रिय भाषा है। सदान जातियों की मातृभाषा होने के साथ साथ यहाँ निवास करने वाले आदिवासियों की सम्पर्क भाषा भी है। नागपुरी भाषा का साहित्य भण्डार काफी भरा पूरा है। नागपुरी साहित्य के गद्य विधा में उत्कृष्ट रचनाएँ हुए हैं। अनेक रचनाकारों ने आधुनिक प्रवृत्तियों की कई विधाओं पर काम किया है।

नागपुरी कथाकार प्रफुल्ल कुमार राय एवं फणीश्वरनाथ रेणु की प्रतिनिधि कथा साहित्यों में ग्रामीण जनजीवन में ग्रामीण जनजीवन की तुलना करने के पूर्व हमें कहानी के बारे में समझना पड़ेगा की कथा किसे कहते हैं, कथा कहने की कला है। जब कोई घटनाएं, कोई उद्देश्य, कोई प्रसंग आदि को जानने के कहानी कला के माध्यम से आगे क्या होगा कि जिज्ञासा बनी रहे। उसे कथा या कहानी कह सकते हैं, जिसे एक बैठक में आसानी से पढ़ा जा सके। जिसमें रहस्या, रोमांच, उत्सुकताएं आदि बना रहे। कथा/कहानी सबसे लोकप्रिय विधा है। यही कारण है कि प्रत्येक भाषा की कथाओं / कहानियों की बहुलता मिलती है। उसी तरह नागपुरी भाषा में भी कथा/कहानी का प्रचलन चला आ रहा है। नागपुरी लोक कथा से लेकर वत्तर्मान शिष्ट कथाएं व कहानियाँ भी नागपुरी भाषा में अत्याधिक मिलती है। नागपुरी भाषा के कथा साहित्य को देखे तो सव र्प्रथम यहाँ के लेखकों ने कई लोक कथाओं का संग्रह किया। जिसमें सबसे पहले 1906 ई. में फा° कोनराल्ड बूकाउट 'सदानी फा ॅकलोर स्टोरीज' का प्रकाशन कराया, जिसमें 11 लोक कथाओं का संग्रह है। उसी कड़ी में 1924 में रेव. जे. जोन्स 9 लोककथा संग्रह किया। सन 1957 ई. में फादर पीटर शांति नवरंगी 'ए सदानी रीडर' तो 1964 ई. में 'नागपुरी सदानी साहित्य' में भी नागपुरी लोक कथा संग्रह है। जितिया कहानी 1947 ई. में धनीराम बख्शी हितैषी कायार्लय चाईबासा से छपी। उन्हीं का सन् 1948 ई. में 'फोगली बुढ़िया कर कहनी' डॉ. राम प्रसाद, शकुंतला मिश्र आदि की संग्रह लोक कथा आदि छपी। यहीं से आगे नागपुरी शिष्ट कथा/कहानी का आरंभ होता है। सन् 1939 ई. में झारखण्ड पत्रिका, उसके बाद सन् 1941 ई. में आदिवासी पत्रिका राधाकृष्णन के संपादन से ही नागपुरी कथा/कहानी मिलना प्रारंभ हो जाता है। लेकिन उसकी प्रति अभी उपलब्ध नहीं है। इसी कड़ी में नागपुरी पत्रिका सन् 1961 ई. में प्रफुल्ल कुमार राय कि 'बिन बातक बात, अवसरे नी मिले बुझु आउर किलकिला' के अलावे भी 'अब भेली लेदरा पिंधइया' आदि छपी। उसके बाद से लगातार नागपुरी कथाओं/कहानियों की रचनाएँ हुई । कई पत्रिकाओं के माध्यम से अनेक लेखकों ने अपनी रचनाओं से नागपुरी कथा / कहानी के भण्डार को भरने का काम किया। इसी कड़ी में योगेंद्र नाथ तिवारी की 'भूतक भूत' सन् 1964 ई. में, वहीं राधाकृष्णन का 'डाइन कर पइरी' और भुवनेश्वर अनुज का 'कंचन नाथ' आदि कहानी छपी। आगे प्रफुल्ल कुमार राय की 'सोनझइर' सन् 1967 ई. में छपी जो नागपुरी कहानी का प्रथम व्यक्तिगत संग्रह है। उसी कड़ी में 'बिंझिया' सन् 1980 शारदा प्रसाद शर्मा की, नईमुद्दीन मिरदाहा की 'मेंजूर पांईख' सन् 1983 में, प्रफुल्ल कुमार राय की ' रिंगचिगिया' सन् 1983 में, बड़ाईक ईश्वरी प्रसाद सिंह का 'काका कर कहनी' सन् 1985 में, 'काँटी' कहानी संग्रह डॉ.विसेश्वर प्रसाद केशरी के संपादन में निकली। इसके बाद और भी कई कहानियाँ नागपुरी भाषा की शोभा बढ़ा रही है।

कथा - कहानियों में झारखंड के ग्रामीण जनता का हमेशा प्रतिनिधि किया है, जो ग्रामीण परिवेश को, उसके मर्म को इन कथा - कहानियों में देखा जा सकता है। कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में ग्रामीण जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों को चित्रित करते हैं। उनकी इसी अद्भूत क्षमता के कारण उनकी रचनाएँ कालजयी बनी।

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में दैनिक जीवन का चित्रण और ग्रामीण वातावरण का मुख्य रूप से प्रस्तुत हुआ है। उनकी कहानियों में किसान, मजदूर, जमींदार, पूंजीपति, महाजनी व्यवस्था उच्च - निम्न वर्ग की नारी आदि के चित्र

दिखाई देते हैं। उनकी लेखन-शैली वर्णणात्मक थी । पात्रों का चरित्र-निर्माण काफी तेजी से होता था । उनका लेखन प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी परंपरा को आगे बढाता है । उनकी साहित्यिक कृतियाँ हैं - * उपन्यास : मैला आंचल, परती परिकथा, जूलूस, दीर्घतपा, कितने चौराहे, पलटू बाबू रोड। * कथा-संग्रह : एक आदिम रात्रि की महक, ठुमरी, अग्निखोर, अच्छे आदमी।

मैं अपनी शोध विषय के माध्यम से नागपुरी कहानियों और फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से उसके महत्व और उद्देश्य को सामने रखने का प्रयास करूँगी।

प्रेरणा :

झारखण्ड मेरी जन्मभूमि है यथा नागपुरी भाषा मेरी मातृभाषा है। मातृभाषा के रूप में नागपुरी भाषा के प्रति लगाव एवं झुकाव मेरी बल्यावस्था से ही रही है। मेरी अपनी पढ़ाई की अवधि में मुझे नागपुरी भाषा को करीब से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे अपने अध्ययन काल के दौरान नागपुरी की अनेक रचना तथा रचनाकारों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। नागपुरी भाषा साहित्य के विकास में आधुनिक नागपुरी कहानी की क्या भूमिका रही, किस तरह से आधुनिक कहानियों ने नागपुरी भाषा के विकास में अपनी अहम भूमिका निभाई उसे मैं अपने शोध कार्य के दौरान स्पष्ट करने का पूरा - पूरा प्रयास करूँगी।

इस विषय पर मेरे शोध निर्देशक डॉ. जुन सिंह मानकी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय के डॉ. उमेश नन्द तिवारी, डॉ. बीरेन्द्र कुमार महतो, डॉ. रीझू नायक, डॉ. मनोज कच्छप तथा डॉ. योगेश कुमार महतो ने भी मुझे प्रेरित किया, जिससे मुझे शोध करने के लिए प्रेरणा मिली।

परिकल्पना :

प्रत्येक अनुसंधान का आधार परिकल्पना ही होता है। वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना ही होता है। वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना के अभाव में संभव नहीं है। परिकल्पना का तात्पर्य पूर्ण चिंतन से है अथार्त् किसी समस्या के हल के बारे में पहले से अनुमान लगाना ही परिकल्पना होती है। आधुनिक नागपुरी कहानी के उद्भव और विकास को जानना साथ ही इसके ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने शोध के समक्ष प्रस्तुत करने की कोशिश होगी।

शोध का उद्देश्य :

1. नागपुरी भाषा साहित्य का गहन अध्ययन करना।

2. नागपुरी भाषा साहित्य के महत्व एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि करना तथा इनके संकलन संचयन की दिशाएँ प्रशस्त करना।

3. नागपुरी भाषा साहित्य के विकास में आधुनिक नागपुरी कहानी के योगदान पर प्रकाश डालना।

4. नागपुरी भाषा साहित्य को सुदृढ़ करना तथा इसके विकास में योगदान देना।

5. कहानियों के तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा दोनों कहानियों में ग्रामीण जीवन की समानता को दिखाना।

शोध विधि :

निम्नलिखित विधियों के द्वारा शोध कार्य किए जा सकते हैं -

1. अवलोकन विधि

2. साक्षात्कार विधि

3. प्रश्नावली विधि

4. विश्लेषणात्मक विधि

5. तुलनात्मक विधि

शोध उपकरण :

निम्नलिखित सामग्री शोध के लिए उपयोग किए जा सकते हैं -

1. शोध से संबंधित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएँ, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।

2. पत्र - पत्रिकाओं जैसे गोतिया, जोहार सहिया, डहर, नागपुरी समाचार इत्यादि।

3. टेपरिकाॅर्डर (साक्षात्कार, सभा आदि के लिए आवश्यक)

4. कैमरा (आवश्यक चित्र को एकत्रित करने, फोटो खींचने एवं वीडियों वगैरह तैयार करने के लिए आवश्यक)

5. मोबाइल

6. कम्प्यूटर

7. इंटरनेट

8. नक्शा, पेपर इत्यादि।

शोध की प्रासंगिकता :

आज का युग आधुनिक युग है। ज्ञान - विज्ञान के क्षेत्रों में जो प्रगति हो रही है। उससे आज का विश्व छोटा होता जा रहा है। आज हम भौगोलिक सीमाओं को पार करते हुए वृहत्तर संबंधों को जोड़ रहे हैं इसमें व्यक्ति के समग्र ज्ञान का क्षितिज विस्तृत हो रहा है और उसका संबंध अन्य साहित्य से जुड़ रहा है, जो 'वसुधैव कुटुंबकम' अथार्त् विश्व बंधुत्व की भावना पैदा करने में सहायक है। इसके साथ - साथ ज्ञान के विश्वव्यापी प्रसार से मानव चेतना के नए आयामों में विस्तार आया है। वह सारी सीमाओं को लांघते हुए हम यह अनुभव करते हैं कि अपनी साहित्य किसी दूसरे साहित्य से तुलना होने का अर्थ है तीसरी आँख या तीसरी कान का होना। या तीसरी आँख या तीसरे कान की उपलब्धि तुलना से ही संभव है।

शोध कार्य का प्रारूप

अध्यायीकरण

भूमिका

1. शोध की प्रेरणा और औचित्य

2. शोध की विषय सीमा

3. शोध विधि

4. शोध से संबंधित लिखित साहित्य का परिचय

प्रथम अध्याय: कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु एवं प्रफुल्ल कुमार राय का सामान्य परिचय

1. प्रफुल्ल कुमार राय का संक्षिप्त जीवन वृत्त

2. फणीश्वरनाथ रेणु का संक्षिप्त जीवन वृत्त

3. फणीश्वरनाथ रेणु की ग्रामीण जीवन की कहानियाँ

4. प्रफुल्ल कुमार राय की ग्रामीण जीवन की कहानियाँ

द्वितीय अध्याय : नागपुरी कहानी का सामान्य परिचय

नागपुरी के प्रमुख कहानीकार एवं उनकी कहानियाँ

तृतीय अध्याय : प्रफुल्ल कुमार राय की कहानियाँ और फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों के ग्रामीण किसान

1. खेतिहर किसान

2. खेतिहर मजदूर

चतुर्थ अध्याय : प्रफुल्ल कुमार राय की कहानियों और फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों के ग्रामीण मजदूर
1. गाँव में रहकर काम करने वाले मजदूर
2. गाँव से बाहर रहकर शहर में काम करने वाले मजदूर

पंचम अध्याय: प्रफुल्ल कुमार राय की कहानियों और फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों के शिल्पकर्मी

1. विभिन्न जातियों के ग्रामीण शिल्पकर्मी

षष्ठ अध्याय : प्रफुल्ल कुमार राय की कहानियों और फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों के ग्रामीण कलाकार

सप्तम अध्याय : प्रफुल्ल कुमार राय की कहानियों और फणीश्वरनाथ रेणु के ग्रामीण सेवक और सेविका

अष्टम अध्याय : प्रफुल्ल कुमार राय की कहानियों और फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में प्रतिबिंब संस्कृति की तुलना

निष्कर्ष

परिशिष्ट
1. आधार ग्रंथों की सूची
2. संदर्भ ग्रंथों की सूची
3. पत्र - पत्रिकाओं की सूची
4. साक्षात्कार की सूची
5. चित्रावली

नोट : आवश्यक होने पर शोध प्रारूप में आंशिक परिवतर्न किये जा सकते हैं।

शोध निर्देशक

डॉ. जुरन सिंह मानकी
सहायक प्राध्यापक
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग (मुंडारी)
एस.एस.मेमोरियल कॉलेज राँची

शोधार्थी

उमा कुमारी
यू॰जी॰सी॰ नेट (नागपुरी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय राँची

आधार ग्रन्थ सूची :

1. रेणु, फणीश्वरनाथ - मैला आंचल (1954)
2. रेणु, फणीश्वरनाथ - परती परिकथा (1957)
3. रेणु, फणीश्वरनाथ - कितने चौराहे (1966)
4. रेणु, फणीश्वरनाथ - कलंक मुक्ति (1972)
5. रेणु, फणीश्वरनाथ - पलटू बाबू रोड (1979)
6. रेणु, फणीश्वरनाथ - ठुमरी (1959)
7. रेणु, फणीश्वरनाथ - एक आदिम रात्रि की महक (1967)
8. रेणु, फणीश्वरनाथ - एक श्रावणी दोपहर की धूप (1984)
9. रेणु, फणीश्वरनाथ - अच्छे आदमी (1986)
10. राय, प्रफुल्ल कुमार - शंकर गोटेक जिनगी (उपन्यास)
11. राय, प्रफुल्ल कुमार - रिंगचिंगिया (कहानी संग्रह)
12. राय, प्रफुल्ल कुमार - एक चकता रऊद (कहानी संग्रह)
13. राय, प्रफुल्ल कुमार - कांटी (कहानी संग्रह)
14. राय, प्रफुल्ल कुमार - सोनझईर (कहानी संग्रह)

सन्दर्भ ग्रंथो की सूची

नागपुरी पुस्तकों की सूची:

क्र. सं.	लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	वर्ष
1.	अनुज डॉ. भुवनेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	जय भर्ती-इलाहबाद	1992
2.	केशरी डॉ. विसेश्वर प्रसाद	उद्गम और विकास	झारखण्ड झरोखा, रांची	2006
3.	केशरी डॉ. विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी भासा और साहित्य	कमल प्रकाशन, रांची	1971
4.	गोस्वामी डॉ. श्रवण कुमार	नागपुरी शिष्ठ साहित्य	रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइंसेज	1972
5.	शुक्ल आचार्य रामचन्द्र	हिन्दी साहित्य का इतिहास	कमल प्रकाशन नागरी प्राचारणी सभा	2005
6.	केशरी डॉ. विसेश्वर प्रसाद	कांटी	झारखण्ड झरोखा, रांची	1996
7.	कुमार डॉ. राम	फुलकुँवइर	पृथ्वी प्रकाशन रोहतक, नई दिल्ली	2018
8.	गाँझू डॉ. गिरिधारी राम	धांगर	पृथ्वी प्रकाशन रोहतक, नई दिल्ली	2019
9.	गाँझू डॉ. गिरिधारी राम एवं मिश्र शकुन्तला	रूगड़ा. खुखड़ी	झारखण्ड झरोखा, राँची	2013
10.	मिरदाहा नईमुद्दीन	मेंजुर पाँईख	झारखण्ड झरोखा, राँची	1983
11.	मिश्र शकुन्तला तिवारी डॉ. उमेश नन्द	एक चकता रउद	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
12.	शर्मा शारद प्रसाद	बिंझिया	लक्ष्मीकांत शर्माशारद भवन, गुमला	1980

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

क्र°सं°	पत्र-पत्रिकाओं का नाम	अवधि	प्रकाशक स्थान
1.	आदिवासी	सप्ताहिक	राँची
2.	आदिवासी सकम	सप्ताहिक	जमशेदपुर
3.	गोतिया	सप्ताहिक	दुमसा टोली चुटिया राँची
4.	झारखण्ड समाचार	सप्ताहिक	राँची
5.	नागपुरी	सप्ताहिक	राँची
6.	शंखनाद	त्रैमासिक	सिमडेगा
7.	पझरा	अनियमित कालीन	सिमडेगा
8.	जय झारखण्ड	त्रैमासिक	डालटेनगंज
9.	छोटानागपुर एक्सप्रेस	मासिक	राँची
10.	जोहार सहिया	मासिक	राँची
11.	प्रभात खबर	दैनिक	राँची
12.	दैनिक जागरण	दैनिक	राँची
13.	दैनिक भास्कर	दैनिक	राँची
14.	हिन्दुस्तान	दैनिक	राँची
15.	झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखरा	त्रैमासिक	राँची